

नगरीय ऊष्मा द्वीप

प्रलिस के लयः

नगरीय ऊष्मा द्वीप, गरीनहाउस गैसों एवं गरीनहाउस प्रभाव, जलवायु परवर्तन एवं इसके प्रभाव, नासा का पारतंत्र स्पेसबोर्न थर्मल रेडयोमीटर एक्सपेरमेंट (ECOSTRESS) ।

मेन्स के लयः

नगरीय ऊष्मा द्वीप का कारण और प्रभाव, जलवायु परवर्तन का परस्पर संबंध, हीट वेव एवं नगरीय ऊष्मा द्वीप ।

चर्चा में क्यों?

हाल में भारत के कई हस्सिसे भीषण गर्मी की लहरों का सामना कर रहे हैं । शहरी क्षेत्र ऐसे स्थान हैं जनिका तापमान ग्रामीण क्षेत्रों के तापमान की तुलना में अधिक है । इसी घटना को **"नगरीय ऊष्मा द्वीप"** कहा जाता है ।

- वशषज्जों के अनुसार, ये तापमान वसिंगतयिों अत्यधिक शहरीकृत और अरद्ध-शहरी क्षेत्रों के तापमान में भन्निता के साथ-साथ आसपास के क्षेत्रों में खुले और हरे भरे स्थानों की उपलब्धता के कारण हैं ।

नगरीय ऊष्मा द्वीप:

- नगरीय ऊष्मा द्वीप को स्थानीय और अस्थायी घटना के रूप में परभाषति कयिा जा सकता है जसिमें एक शहर के भीतर कुछ क्षेत्र अपने आसपास के क्षेत्र की तुलना में अधिक तापमान का अनुभव करते हैं ।
- नगरीय ऊष्मा द्वीप का नरिमाण मूल रूप से कंकरीट से बने शहरों की इमारतों और घरों के कारण होता है जसिके कारण उत्सर्जति ऊष्मा आसानी से वायुमंडल में नहीं पहुँच पाती है ।
 - नगरीय ऊष्मा द्वीप मूल रूप से कंकरीट से बने प्रतषिठानों के बीच ऊष्मा के एकत्र होने से प्रेरति होता है ।
 - तापमान में यह भन्निता 3 से 5 डिग्री सेल्सयस के बीच हो सकती है ।

ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में नगरीय क्षेत्रों के अधिक गर्म होने का कारण:

- यह देखा गया है कऱन्य क्षेत्रों की तुलना में हरे-भरे क्षेत्रों में कम तापमान का अनुभव होता है ।
- नगरीय क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में वृक्षारोपण, खेत, जंगलों और पेड़ों के रूप में अपेक्षाकृत अधिक हरा-भरा आवरण होता है । यह हरति आवरण अपने परवश में गर्मी को नयित्तरति करने में प्रमुख भूमिका नभाता है ।
- वाष्पोत्सर्जन वह प्रक्रयिा है जसि पौधे तापमान को नयित्तरति करने के लयि करते हैं ।
- नगरीय क्षेत्रों में नगरीय ऊष्मा द्वीप का मूल कारण नमिन्लखिति हैं:
 - गगनचुंबी इमारतों, सड़कों, पार्कगि स्थलों, फुटपाथों और सार्वजनिक परवहन पारगमन लाइनों के बार-बार नरिमाण ने नगरीय ऊष्मा द्वीप की घटनाओं को तेज़ कर दयिा है ।
- यह काले या कसिी गहरे रंग के पदार्थ के कारण होता है ।
 - नगरों में आमतौर पर काँच, ईट, सीमेंट और कंकरीट से नरिमति इमारतें होती हैं, ये सभी गहरे रंग की सामग्री हैं, जसिका अर्थ है कऱयह सामग्री उच्च ऊष्मा को आकर्षति और अवशोषति करती है ।

अर्बन हीट आइलैंड का कारण:

- नरिमाण गतवधियिों में कई गुना वृद्धि: साधारण शहरी आवासों के जटलि बुनयिादी ढाँचे के नरिमाण एवं वसितार के लयि डामर और कंकरीट जैसी कार्बन अवशोषति सामग्री की आवश्यकता होती है जो बड़ी मात्रा में तापमान को अवशोषति करते हैं, अतः इस कारण शहरी क्षेत्रों की सतह के औसत तापमान में वृद्धि होती है ।

- **गहरे रंग की सतह:** शहरी क्षेत्रों में नरिमति भवनों की बाहरी सतह को सामान्यतः काले या गहरे रंग से रंग दिया जाता है जिस कारण अलबेडो अर्थात् पृथ्वी से सूर्य की ऊष्मा का परावर्तन कम हो जाता है और गर्मी का अवशोषण बढ़ जाता है।
- **एयर कंडीशनिंग:** तापमान को न्यंत्रित करने के लिये एयर कंडीशनर का प्रयोग किया जाता है जिसके लिये बजिली संयंत्रों हेतु अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है, जो अधिक प्रदूषण का कारण बनता है। इसके अलावा एयर कंडीशनर वायुमंडलीय हवा के साथ ऊष्मा का आदान-प्रदान करते हैं जो स्थानीय स्तर पर हीटिंग उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार यह एक कास्केड प्रभाव (Cascade Effect) है जो शहरी ऊष्मा द्वीपों के वस्तितार में योगदान देता है।
- **शहरी नरिमाण शैली:** ऊँची इमारतें और संकरी सड़कें हवा के संचलन में बाधा उत्पन्न करती हैं जिससे हवा की गति धीमी हो जाती है जो प्राकृतिक शीतलन प्रभाव को कम करता है। इसे अर्बन कैनयिन इफेक्ट (Urban Canyon Effect) कहा जाता है।
- **बड़े पैमाने पर परविहन प्रणाली की आवश्यकता:** परविहन प्रणाली और जीवाश्म ईंधन का बड़े स्तर पर उपयोग शहरी क्षेत्रों में तापमान को बढ़ाता है।
- **वृक्ष और हरति क्षेत्र की कमी:** वृक्ष और हरति क्षेत्र वाष्पीकरण एवं कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन की क्रिया को कम करते हैं तथा ये सभी प्रक्रियाएँ आसपास की हवा के तापमान को कम करने में मदद करती हैं।
- **नगरीय ऊष्मा द्वीप में कमी के उपाय:**
- **हरति आवरण के तहत क्षेत्र में वृद्धिकरना:** वृक्षारोपण और हरति आवरण के तहत क्षेत्र को बढ़ाने के प्रयास शहरी क्षेत्रों में गर्मी की उच्च स्थितिको कम करने के लिये प्राथमिक आवश्यकता है।
- **नगरीय ऊष्मा द्वीप को कम करने के लिये 'पैसवि कूलिंग':** पैसवि कूलिंग टेक्नोलॉजी, प्राकृतिक रूप से हवादार इमारतों को बनाने के लिये व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली रणनीति, आवासीय और वाणज्यिक भवनों के लिये एक महत्त्वपूर्ण विकल्प हो सकती है।
 - आईपीसीसी रिपोर्ट प्राचीन भारतीय भवन डिजाइनों का संदर्भ देती है, जिसे ग्लोबल वार्मिंग के संदर्भ में आधुनिक सुविधाओं के अनुकूल बनाया जा सकता है।
- ऊष्मा शमन के अन्य तरीकों में उपयुक्त नरिमाण सामग्री का उपयोग करना शामिल है।
 - ऊष्मा को प्रतिबिंबित करने और अवशोषण को कम करने के लिये छतों को सफेद या हल्के रंगों में रंगा जाना चाहिये।
 - टेरेस प्लांटेशन और कचिन गार्डनरिंग को बढ़ावा दिया जाना चाहिये।

भारत के नगरीय ऊष्मा द्वीप के संदर्भ में नासा का वशिलेषण:

- नासा के अनुसार, दलिली के शहरी भागों में नगरीय ऊष्मा द्वीप की अधिक घटनाएँ हो रही हैं।
 - दलिली के आसपास के कृषि क्षेत्रों की तुलना में शहरी भागों का तापमान काफी अधिक है।
- नासा के इकोसिस्टम स्पेसबोर्न थर्मल रेडियोमीटर एक्सपेरिमेंट (इकोस्ट्रेस) द्वारा ली गई तस्वीर ने दलिली क्षेत्र में बड़े पैमाने पर लाल धबबे, साथ ही पड़ोसी शहरों जैसे- सोनीपत, पानीपत, जींद और भविानी के आसपास छोटे लाल धबबों का खुलासा किया है।
 - इकोस्ट्रेस रेडियोमीटर से युक्त उपकरण है जिसे नासा द्वारा 2018 में [अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन](#) पर भेजा गया था।
 - इकोस्ट्रेस मुख्य रूप से पौधों के तापमान का आकलन करने के साथ-साथ उनकी जल की आवश्यकताओं और उन पर जलवायु के प्रभाव को जानने का कार्य करता है।
- इकोस्ट्रेस के आँकड़ों में ये लाल धबबे नगरीय ऊष्मा द्वीप के अधिक तापमान, जबकि शहरों के आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में कम तापमान की घटनाओं का संकेत देते हैं।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस